उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय

स्व-अध्ययन पाठ्यसामग्री निर्माण नियमावली

आभार

प्रस्तुत नियमावली उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा दिनांक 24/25 जनवरी 2011 को स्व-अध्ययन पाठ्यसामग्री के विकास हेतु आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के निष्कर्षों पर आधारित है। यह कार्यशाला प्रो0 स्वराज बसु, सामाजिक विज्ञान विद्याशाखा, इग्नू, प्रो0 मंजुलिका श्रीवास्तव, दूरस्थ शिक्षा परिषद् एवं प्रो0 सी. आर. के. मूर्ति (स्ट्राइड) द्वारा संयोजित एवं संचालित की गयी।

इस नियमावली को तैयार करने में प्रो0 मंजुलिका श्रीवास्तव की पुस्तिका ***'ट्रांसफॉर्मेशन ऑफ प्रिन्ट मटीरियल्स इन्टू सेल्फ लर्निंग मटीरियल्स'*** का विशेष योगदान है।

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण व्यवस्था

ज्ञानार्जन के क्षेत्र में अध्यवसाय का महत्वपूर्ण स्थान है तथा भारतवर्ष में इसकी विशेष परम्परा रही है। इसीलिए भारतीय परिप्रेक्ष्य में दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था आज बेहद प्रासंगिक है, क्योंकि यह शिक्षण व्यवस्था छात्र को पारम्परिक शिक्षण पद्धति से मुक्त रखकर शैक्षणिक उन्नति के अवसर प्रदान करती है।

ज्ञान-सम्पदा के इस युग में उच्च शिक्षा विकास का एक महत्वपूर्ण कारक है। इस सन्दर्भ में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की भूमिका महत्वपूर्ण है। सम्पूर्ण विश्व का अनुभव बताता है कि दूरस्थ शिक्षा समाज के उन विभिन्न वर्गों के सशक्तीकरण का एक प्रभावशाली माध्यम है, जो अन्यान्य कारणों से औपचारिक शिक्षा से वंचित रहे हैं। वर्तमान में दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से अनेक व्यावसायिक एवं तकनीकी पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं। इनके अन्तर्गत कुछ ऐसे पाठ्यक्रम भी हैं जो तकनीकी प्रयोग के विशिष्टतम उपयोगों की ओर अभिमुख हैं। वे लोग जो दुर्गम एवं दूरवर्ती स्थानों में निवास करते हैं, जो समाज की मुख्य धारा से वंचित रहे हैं, ऐसे सभी वर्गों को दूरस्थ शिक्षा पुनः केन्द्र में लाकर एक सम्माननीय शैक्षिक जीवन जीने के लिये सशक्त करती है।

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के व्यापक दर्शन की पृष्ठभूमि पर उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना वर्ष 2005 में उत्तराखण्ड शासन अधिनियम संख्या 23 द्वारा इस उद्देश्य से की गयी कि तमाम ज्ञान और कला-कौशल की 'स्वयं सीख पाने' की विविध विधाओं द्वारा सक्षमता लोगों तक पहुँचायी जा सके। उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय अपनें अनेक नूतन, समसामयिक एवं उपयोगी शैक्षणिक कार्यक्रमों को सम्प्रेषण के नवीनतम प्रयोगों तथा सम्पर्क सत्रों द्वारा अधिक सुदृढ़ बनाता रहा है। विश्वविद्यालय का मुख्य उद्देश्य इस राज्य के त्वरित विकास एवं उन्नयन हेतु प्रशिक्षित एवं विभिन्न कौशलों में दक्ष उपयोगी मानव संसाधनों का विकास करना है। इस विश्वविद्यालय का उद्देश्य रहा है कि शिक्षा की गुणवत्ता से कभी भी किसी भी स्तर पर कोई समझौता न किया जाय। व्यावसायिक एवं तकनीकी शिक्षा में तीव्रता से हो रहे बदलाव को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय ने अपने पाठ्यक्रमों को इस प्रकार पुनर्गठित किया है कि रोज़गार एवं स्व-रोज़गार के नित नये द्वार खुल सकें।

विश्वविद्यालय मुख्य रूप से स्त्रियों, जनजातियों तथा मुख्य धारा से अलग वर्गों के शैक्षिक उन्नयन हेतु कटिबद्ध है। विश्वविद्यालय के दिन-ब-दिन होते विस्तार से इसकी पहुँच आज इस राज्य के सुदूरवर्ती एवं दुर्गम स्थलों तक जा पहुँची है। विभिन्न कम्पनियों एवं संगठनों से सहमति अनुबन्ध पत्र (एम.ओ.यू.) हस्ताक्षरित करके व्यवस्था की गयी है कि तमाम ज्ञान और संसाधनों का जनहित में मिलजुल कर उपयोग किया जा सके। विश्वविद्यालय का मूल चिन्तन है कि विकास के सभी महत्वपूर्ण कारकों को गुणकारी उच्च शिक्षा द्वारा प्रतिष्ठित कर राज्य की सेवा में लाया जा सके।

नियमावली का उद्देश्य

यह नियमावली पाठ्यक्रम लेखकों एवं सम्पादकों को स्व-अध्ययन हेतु पाठ्यसामग्री तैयार करने लिए दिशा-निर्देश प्रदान करती है। साथ ही यह छात्र विशेष की आवश्यकताओं को देखते हुए पाठ्यक्रम को विकसित, अनूदित एवं सुग्राह्य बनाने में सहायक सिद्ध होगी।

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित शब्दावली

कार्यक्रम - कार्यक्रम का आशय स्नातक एवं स्नातकोत्तर उपाधियों तथा विविध डिप्लोमा एवं प्रमाणपत्र पाठ्यक्रमों से है।

पाठ्यक्रम - परम्परागत शिक्षण व्यवस्था के प्रश्नपत्र का विकल्प यहाँ पाठ्यक्रम है। यह कुछ मुद्रित खण्डों, दृश्य-श्रव्य सामग्री, एसाइनमेन्टस, गृह कार्य, अभ्यास सत्रों (आवश्यक होने पर), परामर्श सत्र, प्रोजेक्ट/परियोजना कार्य, कुछ पाठयक्रमों में पुस्तकालय आदि पर आधारित है।

खण्ड - विषय विशेष पर केन्द्रित लगभग 60 से 80 ए 4 साइज के पृष्ठों में मुद्रित पुस्तिका है, सामान्यत: एक पाठ्यक्रम में 4 से 6 खण्ड होते हैं, किन्तु कुछ पाठ्यक्रमों में यह कम या अधिक भी हो सकते है।

इकाई- इकाई एक पाठ है। यह पाठ/अध्याय 5,000 से 6,000 शब्दों अथवा 20-25 मुद्रित पृष्ठों का होता है।

नोट – पाठ्यक्रम का एक मानक खण्ड 3-4 इकाईयों में विभक्त होता है, जिसके अध्ययन के लिए 30 घण्टे निर्धारित हैं। यह मानक खण्ड एक क्रेडिट के समतुल्य है। क्रेडिट का निर्धारण पाठ्यक्रमों के लिए होता है, अत: किसी खण्ड विशेष का क्रेडिट मूल्य पाठ्यक्रम के पूर्ण संयोजन पर निर्भर करेगा।

स्व-अध्ययन हेतु पाठ्यसामग्री

इस संदर्भ में हममें से अधिकाधिक ने अनेक पुस्तकों तथा शोध पत्रों का लेखन किया है, परन्तु इनमें प्रयुक्त शैली बहुधा क्लिष्ट, संश्लिष्ट तथा विषय विशेष के पारिभाषिक शब्दावली से बोझिल होती है। दूरस्थ शिक्षण व्यवस्था के अन्तर्गत पाठ्य सामग्री का लेखन परम्परागत शिक्षण व्यवस्था के अन्तर्गत होने वाली पाठ्य सामग्री लेखन प्रक्रिया से मूलत: भिन्न होता है। स्व-अध्ययन हेतु पाठ्य सामग्री तैयार करते हुए विशेषज्ञ को छात्र के भौगोलिक, सामाजिक एवं शैक्षिक स्तर की प्राथमिकताओं को ध्यान में रखना होता है।

इनमें से बहुत से छात्र पारम्परिक शिक्षा व्यवस्था से कई अर्थों में वंचित रहे हैं; कुछ तो वर्षो पहले स्कूल एवं कॉलेज छोड़ चुके होते है, तथा कुछ लिए संस्थाओं की भौगोलिक दूरी एवं सामाजिक, आर्थिक परिवेश बाधक बन जाता है। एक तरह से कुछ शिक्षार्थी पठन-पाठन की नई शुरूआत कर रहे होते हैं। इन्हें पुस्तकालय तथा अन्य माध्यमों से पाठ्यवस्तु की सहज उपलब्धता नहीं होती है, तथा साथ ही अपने अन्य दायित्वों के बीच इनके पास समय की भी कमी होती है।

इनमें हर तरह के लोग होते हैं - वह जो वर्षो पूर्व शिक्षा बीच में छोड चुके होते है, वह जो रोजगार में लगे हैं और अपने ज्ञान में वृद्धि करना चाहते हैं, तथा वे भी जो अपनी स्नातक/स्नातकोत्तर उपाधियों के साथ व्यवहारमूलक पाठ्यक्रमों का अध्ययन करना चाहते हैं। स्व- अध्ययन हेतु पाठ्यसामग्री का निर्माण करते समय इन सभी बातों को ध्यान में रखा जाना आवश्यक है। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में एक निश्चित पद्धति के अन्तर्गत पाठ्यसामग्री विकसित करनी आवश्यक होती है जिससे छात्र अलग-अलग समय में पाठ्यसामग्री का क्रमबद्ध अध्ययन कर सके।

यह पाठ्यसामग्री सरल, स्पष्ट, सारगर्भित एवं स्वयं में सम्पूर्ण होनी चाहिए। यह भी ज़रूरी है कि पाठ्य सामग्री शिक्षार्थी में आत्मविश्वास जगाने वाली और प्रेरणादायी हो, साथ ही शिक्षार्थी को आश्वस्त करती हो कि यह स्तरीय, ज्ञानवर्धक और कार्यकौशल को बढ़ाने वाली है।

जहाँ तक संभव हो, संवाद शैली का प्रयोग किया जाय, लेकिन भाषा स्तरीय हो। यह पाठ्यक्रम एक कुशल शिक्षक एवं कक्षा के शैक्षिक वातावरण की सम्प्रेषणीयता के विकल्प के रूप में लिखा जाना चाहिए।

अध्ययन सामग्री का प्रस्तुतीकरण औसत एवं औसत से निचले स्तर के विद्यार्थियों को ध्यान में रखते हुए किया जाना है। परन्तु इसका कुछ भाग औसत से ऊपर और मेधावी छात्रों की आवश्यकताओं के अनुरूप भी होना चाहिए। निष्कर्षत: पाठ्यसामग्री में इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि भाषा यथासम्भव अलंकारिक न हो। यह भी ध्यान रहे कि इस शिक्षण पद्धति में पाठ्यवस्तु ज्ञानार्जन का महत्वपूर्ण माध्यम है, अत: पाठ्यवस्तु वस्तुत: स्व-निर्देशात्मक होनी चाहिए।

स्व-अध्ययन पाठ्यसामग्री लेखन हेतु महत्वपूर्ण निर्देश

स्व- अध्ययन हेतु पाठ्यसामग्री होनी चाहिए :-

- स्व-व्याख्यायित/व्याख्यात्मक
- स्व-निर्धारित
- स्व-निर्देशित
- आत्म-प्रेरक
- स्व-मूल्यांकनपरक
- स्व-शिक्षणपरक

मुख्य पाठ्य सामग्री का लेखन करते समय ध्यान रखा जाय कि :-

- पाठ्य सामग्री उद्देश्यपूर्ण एवं सुस्पष्ट हो।
- इसमें यथासम्भव संवाद शैली का उपयोग किया जाय।
- समुचित उदाहरणों से विषयवस्तु का विश्लेषण किया जाय।
- दृश्य-श्रव्य सामग्री का प्रयोग किया जाय जिससे पाठ अधिक सुबोध एवं सुग्राह्य बन सके।

- विषय को स्पष्ट करने के लिए चार्ट, सारणी, तस्वीर, ब्लॉक्स, स्केच इत्यादि का प्रयोग अधिकाधिक किया जाय।
- सम्बन्धित ज्ञान को बढाने वाली उक्तियों तथा उद्धरणों को बीच-बीच में दिया जा सकता है।
- पाठ्यसामग्री व्याख्यान जैसी न लगे इसलिए बार-बार विद्यार्थी को सम्बोधित किया जाए, जैसे कि - आप समझ गए हो या नहीं; आप जान गए होंगे; आप समझ गए होंगे आदि आदि।
- विषय सामग्री के प्रस्तुतीकरण की आवश्यकतानुसार हर भाग/अनुभाग के बीच में अभ्यास प्रश्न तथा बोध प्रश्न हों और इकाई के अन्त में इनके उत्तर दिए जाने हैं।
- पारिभाषिक एवं महत्वपूर्ण शब्दों की व्याख्या की जाए।
- पाठ्यसामग्री के अन्त में सारांश दिया जाना है। सारांश संक्षिप्त तथा एक अनुच्छेद में लिखा हो।
- इकाई 5,000 से 6,000 शब्दों (20 से 25 पृष्ठ ए-4 साइज) में लिखी होनी चाहिए। इसमें रेखांकन आदि भी शामिल होंगे।

इकाई की संरचना

इकाई की संरचना एक निर्धारित रूपरेखा के अन्तर्गत होती है, जो अपने आन्तरिक विन्यास में खण्डों के बहुस्तरीय विभाजन में निहित होती है।

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 मुख्य भाग : खण्ड एक

1.3.1 उपखण्ड एक

1.3.2 उपखण्ड दो

.....

1.4 मुख्य भाग : खण्ड दो

1.4.1 उपखण्ड एक

1.4.2 उपखण्ड दो

.....

1.5 मुख्य भाग : खण्ड तीन

1.5.1 उपखण्ड एक

1.5.2 उपखण्ड दो

.....

1.6 सारांश

1.7 शब्दावली

1.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1.9 संदर्भ ग्रन्थ सूची

1.10 सहायक/उपयोगी पाठ्यसामग्री

1.11 निबंधात्मक प्रश्न

नोट - इसमें पहला नं0 इकाई की संख्या द्योतित करता है। प्रस्तुत इकाई की संख्या 1 है। यदि यह इकाई नं0 3 हो तो 1 के स्थान पर यह संख्या 3 हो जायेगी।

इकाई संरचना

मोटे तौर पर इकाई संरचना तीन भागों में विभक्त की जाती है। प्रारम्भिक खण्ड जिसमें 1. विषय का शीर्षक, 2. इकाई की रूपरेखा, 3. उददेश्य तथा 4. परिचय सम्मिलित है।

मुख्य खण्ड जिसमें 1. शीर्षक एवं उपशीर्षक, 2. अभ्यास एवं स्व मूल्यांकन, 3. विस्तारण तथा ग्राफिक्स एवं 4. पाठय संदर्भ सम्मिलित हैं।

समापन खण्ड में सारांश, शब्दावली, स्वमूल्याकंन-परक प्रश्नों के उत्तर, सन्दर्भ एवं विषयोपयोगी पुस्तके, सन्दर्भ ग्रन्थ सूची, तथा बोध-प्रश्न सम्मिलित हैं।

प्रारम्भिक खण्ड

आवरण पृष्ठ : इकाई के आवरण पृष्ठ में विषय के खण्ड एवं उपखण्ड स्पष्ट रूप से दर्शाये जाने हैं। शीर्षक एवं अन्य इकाई की रूपरेखा पृष्ठ के मध्य में होनी चाहिए। आवरण पृष्ठ की कोई पदसंख्या नहीं होगी।

शीर्षक - सामान्यत: इकाई का शीर्षक विषय की समग्रता को स्पष्ट करता है। इकाई लेखक चाहें तो इकाई की आधारभूत विषयवस्तु पर ध्यान आकर्षित करने वाला उपशीर्षक भी दे सकते हैं। किन्हीं विशेष परिस्थितियों में किसी लेखक को सम्पूर्ण खण्ड (ब्लॉक) के लेखन का दायित्व दिया जा सकता है। इस स्थिति में वे अपने विषय के अनुरूप दिए गये खण्ड का समुचित इकाइयों में विभाजन उपयुक्त शीर्षक के साथ स्वयं कर सकते हैं। शीर्षक इकाई में व्यक्त विषय वस्तु का भाव प्रेषण करता है।

इकाई संरचना : आवरण पृष्ठ में इकाई की रूपरेखा शीर्षक, उपशीर्षक खण्डों में दी जाएगी।

आवरण पृष्ठ का नमूना -

इकाई 3 : काव्य प्रयोजन

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 काव्य प्रयोजन : अर्थ एवं स्वरूप

3.4 काव्य प्रयोजन विषयक विभिन्न मत

3.4.1 काव्य प्रयोजन के विषय में भारतीय काव्यशास्त्रियों की दृष्टि

3.4.2 काव्य प्रयोजन के विषय में संस्कृत साहित्यशास्त्रियों का मत

3.4.3 काव्य प्रयोजन के विषय में रीतिकालीन साहित्यशास्त्रियों का मत

3.4.4 काव्य प्रयोजन के विषय में आधुनिक हिन्दी साहित्यशास्त्रियों का मत

3.5 काव्य के प्रमुख प्रयोजन : विश्लेषण एवं निष्कर्ष

3.6 सारांश

3.7 शब्दावली

3.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

3.9 संदर्भ ग्रन्थ सूची

3.10 सहायक/उपयोगी पाठ्यसामग्री

3.11 निबंधात्मक प्रश्न

प्रस्तावना/परिचय - प्रस्तावना में इकाई का संक्षिप्त परिचय लिखा जाना है । परिचय तीन अनुच्छेदों में विभक्त होगा। पहले अनुच्छेद में शिक्षार्थी के विषय से सम्बन्धित पूर्व में अर्जित ज्ञान को इकाई में वर्णित नये ज्ञान से जोड़ना है। दूसरा अनुच्छेद विषय वस्तु के विहंगावलोकन के साथ इकाई पाठ के लिए प्रेरित करने वाला हो। तीसरा अनुच्छेद शिक्षार्थी को इकाई में प्रस्तुत ज्ञान को वास्तविक जीवन/अध्ययन अथवा सीखने के अनुभव से जोड़ने के लिए दिशाबोधक हो। यह शिक्षार्थी को इकाई की पाठ्यवस्तु को आत्मसात करने में सहायक होगा।

नमूना : प्रस्तावना

भारतीय साहित्यशास्त्र से सम्बन्धित यह तीसरी इकाई है इससे पहले की इकाईयों के अध्ययन के बाद आप बता सकते हैं कि साहित्य क्या हैं? साहित्यरचना कैसे होती है?

काव्यप्रयोजनों के महत्व को जानते हुए भारतीय एवं पाश्चात्य चिन्तकों ने बडे ही स्पष्ट रूप से और विस्तार से इसके विषय में चर्चा की है किसाहित्य क्यों लिखा-पढा और सुना जाता साहित्य रचना क्यों होती है प्रस्तुत इकाई में विस्तार से उनके विचार और उनका विश्लेषण प्रस्तुत है।

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप काव्यप्रयोजनों के महत्व को समझा सकेंगे तथा भारतीय एवं पाश्चात्य चिन्तकों के विचारों का सम्यक् विश्लेषण कर सकेंगे।

उद्देश्य - प्रस्तावना अर्थात परिचय के बाद इकाई शिक्षण के उद्देश्य आते हैं। इकाई के उद्देश्य इकाई के अध्ययन से प्राप्त ज्ञान के परिणाम की ओर संकेत करते हैं। पाठ्यसामग्री के निर्माण के लिए उद्देश्य उपयोगी और बहुमूल्य विवरण प्रस्तुत करते हैं। यह स्पष्ट करते हैं कि इकाई के अध्ययन के बाद शिक्षार्थी अर्जित ज्ञान का क्या उपयोग कर सकेगा।

इसके लिए व्यवहारिक क्रियापदों का प्रयोग किए जाने का विधान है। सुविधा के लिए कुछ निर्देशात्मक शब्दों के व्यवहारिक प्रयोग निम्न सारणी में दिखाये जा रहे हैं।

निर्देशात्मक क्रियाओं को व्यवहारिक क्रियाओं में परिवर्तन हेतु उदाहरण

निर्देशात्मक शब्द	*व्यवहारिक प्रयोग*
बोध/जानना	विश्लेषण, व्याख्या, चिन्हित, उद्धृत, चयन, सूचीबद्ध, दोहराव करना। सीधे-सीधे कहना।
बोध करना/समझना	रूपान्तरण, संरक्षण, विविधीकरण, अनुमान करना, समझाना, विस्तारण, सामान्यीकरण, समतुल्यता, पूर्वानुमान, पुनर्लेखन, संक्षिप्तीकरण करना।
सीखना/लागू करना	परिवर्तन, प्रस्तुतीकरण, खोज, नवीनीकरण, संचालन, पूर्वानुमान, तैयार, सम्बन्ध, प्रदर्शन, हल करना, विकल्प, प्रयोग, मूल्यांकन, संरचना, प्राप्ति, चयन करना।
परीक्षण/विश्लेषण	विखण्डन, विभिन्नता, विभेदीकरण, चिन्हित, विस्तार, रूपरेखा, अन्तर्सम्बन्ध, चयन, विभाजन, श्रेणीबद्ध करना।
नियोजन	सम्मिलित, सम्मिश्रित संयोजित व्याख्या, उत्पादित, सुमेलित, सुधार, व्यवस्थित,

	दोहराव, पुनर्लेखन, संक्षेपीकरण, लेखन, संगठित, सम्बद्ध, संवाद, संचालन करना।
मूल्यांकन	अवगत होना, तुलना, निष्कर्ष, तालमेल, समालोचना, विवेचन, विभेदीकरण, व्याख्यायित, प्रमाणित करना, सम्प्रेषित, सम्बद्ध, मूल्यांकित समेकित, समाकलन करना।

नमूना (इकाई के उद्देश्य)

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप -

- बता सकेंगे कि साहित्य क्यों लिखा-पढ़ा सुना जाता है।
- समझ सकेंगे कि साहित्य आनन्द प्राप्ति के लिए, यश प्राप्ति के लिए, धन प्राप्ति के लिए, व्यवहार ज्ञान के लिए ही रचा जाता है और इसी के लिए पढ़ा भी जाता है।
- साहित्य के प्रयोजनों के विषय में भारतीय और पश्चिमी विचार को श्रेणीबद्ध कर सकेंगे।

उद्देश्य लिखते समय याद रखने योग्य बातें

- सरल एवं सुबोध भाषा में लिखे हो।
- विरोधाभाषी क्रियापदों का प्रयोग न हो।
- उद्देश्य कम लेकिन सटीक हो।
- उद्देश्यों की जटिलता का क्रम नीचे से उपर की ओर जाता हो।

इकाई का मुख्य भाग

इकाई के मुख्य भाग में इकाई की विषयवस्तु सन्निहित होती है। इकाई की विषयवस्तु खण्ड एवं उपखण्डों में विभाजित होनी है, जिसे इस प्रकार विभाजित किया जाना है, जैसे- खण्ड 1.1,1.2,1.3 आदि। उपखण्डों को भी विषय विभाजन के अनुसार उप-उपखण्डों में विभाजित किया जा सकता है। लेकिन इन्हें अंकों में विभाजित न कर बोल्ड एवं इटैलिक आदि के माध्यम से दर्शाया जाय।

स्व-मूल्यांकन हेतु अभ्यास एवं बोध प्रश्न

शिक्षार्थियों की प्रगति के स्व-मूल्यांकन हेतु खण्ड एवं उपखण्ड के बाद अभ्यास एवं बोध-प्रश्न दिये जाएं ताकि शिक्षार्थी विचार करे और लिखे। इन बोध-प्रश्नों का उद्देश्य है कि शिक्षार्थी रुके, सोचे और अगली इकाई के अध्ययन से पहले अपनी अब तक की प्राप्त जानकारियों का मूल्यांकन करे। प्रत्येक खण्ड के अन्त में अभ्यास प्रश्न आवश्यक रूप से हों। आवश्यकता होने पर उपखण्ड के बाद भी अभ्यास प्रश्न जोड़े जा सकते हैं।

अभ्यास प्रश्नों के प्रकार

- लघु-उत्तरीय प्रश्न
- दीर्घ-उत्तरीय प्रश्न
- सत्य/असत्य विकल्प
- बहुविकल्पीय प्रश्न
- साम्य प्रकट करने वाले प्रश्न
- एक पंक्ति अथवा एक शब्द में उत्तर वाले प्रश्न
- रिक्त स्थानों की पूर्ति
- क्रम निर्धारण
- ग्राफ/डाइग्राम अथवा सारणी को पूरा करने का कार्य
- पहेली
- पाठ के किसी अंश को अपने शब्दों में लिखना
- सर्वे, साक्षात्कार

उदाहरण -

1. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए -

    क. नाट्यशास्त्र के रचनाकार..... हैं।

2. एक शब्द में उत्तर दीजिए-

    क. पंचमवेद किसको कहा गया है?

3. सत्य/असत्य बताइए-

    क. साहित्य में लोक का अनुकरण होता है

4. बहुविकल्पीय प्रश्न

    क. निम्न में से काव्यप्रयोजन नहीं है-

    अ. यश प्राप्ति स. धन प्राप्ति

    ब. आनन्द प्राप्ति द. अभ्यास

सन्दर्भ दर्शाना :

इकाई लेखन में हम मौलिक लेखन नहीं करते; इसके लिए पुस्तकों, लेखों, इन्टरनेट एवं अन्य सम्प्रेषण माध्यमों से उपलब्ध तथ्यों और विचारों का उपयोग करते हैं। कॉपीराइट एक्ट के परिप्रेक्ष्य में इस बात का ध्यान रखा जाना आवश्यक है कि स्रोत-सामग्री का समुचित तरीके से उल्लेख किया जाय। लेखक का नाम, उपनाम तथा संस्करण वर्ष के साथ सन्दर्भ दिया जाय। अन्त में प्रत्येक सन्दर्भ का विवरण सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में दिया जाय। अन्यथा मूल लेखक द्वारा की गई किसी भी विधिक कार्यवाही के लिए सम्पूर्ण ज़िम्मेदारी इकाई लेखक की होगी।

समापन खण्ड :

सारांश : सारांश इकाई के मुख्य कथ्य का मूल्यांकन करने वाला तथा महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर प्रकाश डालने वाला हो। यह ध्यान में रखें कि सारांश निष्कर्षात्मक न हो। यह विद्यार्थी को पाठ के मुख्य बिन्दुओं को याद रखने में सहायक हो, इसलिए इसे इकाई के अन्त में लिखा जाना है । सारांश एक अनुच्छेद से अधिक लम्बा न हो। यदि लेखक को आवश्यक लगे तो सारांश बुलेट/संकेत चिह्न, डाइग्राम/चार्ट शैली में भी बनाया जा सकता है।

सारांश का नमूना

इस इकाई को पढने के बाद आप यह जान चुके हैं कि लक्षणकारों एवं आधुनिक साहित्यशास्त्रियों ने एक स्वर में काव्य के अध्ययन से प्राप्त होने वाले फल (प्रयोजन) को कवि एवं सहृदय पाठक, दोनों के पक्ष में स्वीकार किए हैं। काव्य का अध्ययन, एवं काव्य की रचना दोनों प्रकारों में फलीभूत है। कवि को भुक्ति तथा मुक्ति दोनों की प्राप्ति होती है तथा चिरस्थायी यश प्राप्त कर वह अमरत्व ग्रहण कर लेता है। काव्य के अध्ययन से परिणत बुद्धि, सुकुमार बुद्धि, और अल्पबुद्धि वालों को भी सहजता से ही धर्मार्थ काममोक्षादि की प्राप्ति हो जाती है। काव्य प्रीति को प्रदान करते हैं तथा घृणा को समाप्त करते हैं, उनके अध्ययन से सहृदय पाठक एवं जन सामान्य भी समाज में व्यवहार ज्ञान प्राप्त कर जीवन में आनन्द की प्राप्ति करते है। इस इकाई के अध्ययन से आप काव्यानुशीलन द्वारा सहज ही प्राप्त होने वाले फलों और उपादानों की अनुभूति को अभिव्यक्त कर सकेंगे।

शब्दावली :

इकाई के अन्त में महत्वपूर्ण एवं पारिभाषिक शब्दावली दी जायेगी। प्रत्येक शब्द का पारिभाषिक एवं तथ्यपरक अर्थ स्पष्ट रूप से दिया जाय जिससे कि शिक्षार्थी उस शब्द से भली-भाँति परिचित हो सके।

शब्दावली का नमूना

काव्य हेतु : कवि शिक्षा के अन्तर्गत कवि में काव्य रचना की सामर्थ्य उत्पन्न करने वाले साधनों को 'काव्य हेतु' अथवा 'काव्य के कारण' कहा जाता है।

काव्य लक्षण : काव्य का स्वरूप स्पष्ट करते हुए आचार्यो द्वारा काव्य के कुछ सामान्य तथा क्रमिक वैचारिक भिन्नता के आधार पर कतिपय नवीन लक्षण निश्चित किए हैं। इन्हीं लक्षणों के आधार पर काव्य की आन्तरिक संरचना पर विचार किया जाता है। पारिभाषिक रूप में इन्हीं लक्षणों को 'काव्य-लक्षण' कहते है।

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर :-

इसके अन्तर्गत बोध प्रश्नों के उत्तर दिये जायेंगे। अगर आवश्यक लगे तो उत्तर में विस्तृत विमर्श, मुख्य बिन्दु तथा विविध दृष्टिकोणों पर सुझाव भी दिया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची :-

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची बनाते समय निम्न परिपाटी अपनायी जाय।

अ. लेखक का नाम, उपनाम पहले दिया जाय
ब. प्रकाशन का वर्ष (कोष्ठ में)
स. प्रकाशन का नाम (इटेलिक्स में)
द. प्रकाशक
य. प्रकाशन का स्थान
र. पृष्ठ संख्या

नोट :- अगर सन्द र्भ कोई शोधपत्र अथवा अध्याय है तो उसके शीर्षक का नाम उद्धरण चिह्न के अन्दर तथा उसके बाद मूल प्रकाशन का नाम दिया जाये।

नमूना: सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भरतमुनि, *नाट्यशास्त्र* (भाग 1 से 7) अनु0 डॉ0 रघुवंश, (1964) मोती लाल बनारसी दास, दिल्ली
2- भामह, *काव्यालंकार,* टीका-आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा, (सं0 2019) बिहार राष्ट्र भाषा परिषद, पटना
3. उपाध्याय, डॉ0 विश्वम्भरनाथ, (2006) *भारतीय काव्यशास्त्र,* वाणी प्रकाशन नई दिल्ली
4. डॉ0 नगेन्द्र, (1963) *भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका,* नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली

उपयोगी/सहायक ग्रन्थ

शिक्षार्थी के ज्ञान वृद्धि में सहायक होने वाले विषय से सम्बन्धित अन्य ग्रन्थों का सन्दर्भ अंकित किये जायें। सामान्यत: स्व-शिक्षण पाठ्य सामग्री औसत विद्यार्थी के लिये पर्याप्त है, परन्तु यदि कोई शिक्षार्थी विषय से सम्बन्धित अतिरिक्त ज्ञान प्राप्त चाहता है तो उसके लिये ये पुस्तकें सहायक सिद्ध होंगी।

इसकी सूची भी संदर्भ ग्रन्थ सूची के समान ही होगी। इस अध्ययन सामग्री में शामिल हैं:-

- पुस्तकें/ग्रन्थ
- ई-लिंक्स
- वेबसाइट्स
- रिपोर्ट
- सी0 डी0
- ब्लॉग्स (इन्टरनेट)
- शोध पत्रिका
- लेख
- उपन्यास आदि आदि ।

सहायक ग्रन्थों का उल्लेख करते समय निम्न बिन्दुओं पर ध्यान देना आवश्यक है :-

- सहायक अध्ययन सामग्री इकाई के विषयवस्तु के अनुसार हो।
- शिक्षार्थी के स्तर की हो।
- इकाई के उद्देश्य पूर्ति में सहायक हो ।
- लेखक के नाम (उपनाम), वर्ष, प्रकाशन, प्रकाशक का नाम, के उल्लेख के साथ हो।

अभ्यासार्थ निबन्धात्मक प्रश्न

यह प्रश्न इकाई की पाठ्य सामग्री से सम्बन्धित होंगे जिन्हे शिक्षार्थी इकाई की पाठ्य सामग्री तथा सहायक पाठ्य सामग्री तथा अन्य स्रोतों के माध्यम से हल कर सकेगा। यह प्रश्न निबन्धात्मक तथा दीर्घ-उत्तरीय होंगे। यह प्रश्न शिक्षार्थी की लेखन शक्ति को विकसित करेंगे तथा सत्रान्त में होने वाली मुख्य परीक्षा में भी सहायक होंगे।

यदि इकाई लेखक को आवश्यक लगे तो प्रयोगात्मक अभ्यास (सर्वे, साक्षात्कार, रिपोर्ट आदि) पर आधारित प्रश्न भी दिये जा सकते हैं।

नमूना : **अभ्यासार्थ प्रश्न**

1. भारतीय काव्य शास्त्र के आधार पर काव्य हेतु का विश्लेषण कीजिए।
2. शब्दार्थौ सहितौ काव्यम् के आधार पर काव्य लक्षण पर एक निबन्ध लिखिए।
3. पाश्चात्य काव्यशास्त्र और भारतीय काव्यशास्त्र में काव्य प्रेरणा के सिद्धान्तों की तुलना कीजिए।

फॉर्मेट/शैली-विन्यास

इकाई लेखकों से अनुरोध हैं कि पाठ्य सामग्री के प्रस्तुतीकरण में गुणवत्ता तथा एकरूपता लाने के लिए निम्नलिखित निर्देशों पर ध्यान दें :-

- **पृष्ठ का आकार** : ए-4 साईज
- **हाशिया:** उपर-नीचे, दाहिने-बाँये, चारो तरफ 2.54 सेन्टीमीटर छोडा जाये।
- **फॉन्ट :** हिन्दी में **मंगल** अथवा **क्रुतिदेव** तथा अंग्रेजी में **टाइम्स न्यू रोमन।**
- **फॉन्ट साईज़ :** मुख्य विषय सामग्री का लेखन हिन्दी में मंगल-12, क्रुतिदेव 14 तथा अंग्रेजी में 12 फॉन्ट साईज़ होगा।
- **लाइन-स्पेसिंग**: 1.15 अथवा सिंगल
- **गुण :** समस्त पाठय सामग्री में रंग काला होगा।
- **हेडर (शीर्ष) :** हाशिया बाए में 0.00 सेमी0, दाहिना 0.00 सेमी0, अन्तराल (स्पेसिंग) 0.51 सेमी0 तथा लम्बाई में 0.10 सेमी0।
- **फुटर (पाद) :** हाशिया बाएं में 0.00 सेमी0, दाहिना 0.00 सेमी0, अन्तराल (स्पेसिंग) 0.51 सेमी0 तथा लम्बाई में 0.10 सेमी0।

शीर्षक का ले-आउट/संरचना

इकाई का शीर्षक

- फॉन्ट : हिन्दी में **मंगल** अथवा **क्रुतिदेव** तथा अंग्रेजी में **टाइम्स न्यू रोमन।**
- फॉन्ट आकार : 18 (हिन्दी/मंगल अथवा **क्रुतिदेव**) 18 (अंग्रेजी/टाइम्स न्यू रोमन)।
- कैपिटल अक्षरों में

खण्ड शीर्षक

- फॉन्ट : हिन्दी में **मंगल** अथवा **क्रुतिदेव** तथा अंग्रेजी **टाइम्स न्यू रोमन।**
- फॉन्ट आकार : 16 (हिन्दी/मंगल अथवा क्रुतिदेव) 16 (अंग्रेजी/टाइम्स न्यू रोमन)।
- कैपिटल, बोल्ड तथा इटेलिक अक्षरों में
- सीमा (बोर्डर) : 0.05 पॉइंट (उपर और नीचे)
- सीमा (बोर्डर) दूरी : 0.5 सेंटीमीटर (उपर और नीचे)

उपखण्ड शीर्षक :

- फोन्ट : हिन्दी में **मंगल** अथवा **क्रुतिदेव** तथा अंग्रेजी **टाइम्स न्यू रोमन।**
- फोन्ट आकार : 14 (हिन्दी/मंगल अथवा क्रुतिदेव) 14 (अंग्रेजी/टाइम्स न्यू रोमन)।
- गुण : बोल्ड

उप-उपखण्ड शीर्षक :

- फोन्ट : हिन्दी में **मंगल** अथवा **क्रुतिदेव** तथा अंग्रेजी **टाइम्स न्यू रोमन।**
- फोन्ट आकार : 13 (हिन्दी/मंगल अथवा क्रुतिदेव) 13 (अंग्रेजी/टाइम्स न्यू रोमन)।
- गुण : बोल्ड

रेखांकन, सारणी आदि मुख्य विषय वस्तु के साथ शीर्षक (कैप्शन) तथा सूचीबद्ध नम्बरों के साथ प्रस्तुत किया जाय। इन्हें पृष्ठ के मध्य में दिया जाये। कैप्शन रेखांकन अथवा सारणी के नीचे दिया जाये। यह हिन्दी में मंगल अथवा क्रुतिदेव (फोन्ट) में 11 साइज तथा टाइम्स न्यू रोमन में 11 साइज में हो। रेखांकन/सारणी के पहले और बाद में एक पंक्ति का अंतराल हो।

हेडर की विषयवस्तु

बाँये : पाठयक्रम का कोड व नाम (एरियल इटेलिक्स, 9 बोल्ड)
(मंगल अथवा क्रुतिदेव इटेलिक्स, 9 बोल्ड)

दाहिने : उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय

फुटर की विषयवस्तु

बाँये : इकाई संख्या (एरियल, 9)

(मंगल अथवा क्रुतिदेव, 9)

दाहिने : इकाई की कुल पृष्ठ संख्या के साथ वर्तमान पृष्ठ संख्या दी जाए, जैसे 1/22 (एरियल, 9 इटेलिक्स; मंगल अथवा क्रुतिदेव, 9 इटेलिक्स)

यूनीकोड का प्रयोग

आज के समय में इन्टरनेट और कम्प्यूटर के बढ़ते प्रयोग से ई-दस्तावेजीकरण का प्रचलन बढ़ा है। जब डिजीटल दस्तावेजीकरण होने लगा है, तब विभिन्न गैर रोमन लिपि की पाठ्य सामग्री भी इन्टरनेट में प्रस्तुत की जा रही है। यूनीकोड के प्रयोग से पहले गैर रोमन लिपि में प्रस्तुत इन्टरनेट सामग्री को पढ़ने के लिए एक निश्चित फॉन्ट की आवश्यकता पड़ती थी। इन लिपियों को सभी कम्प्यूटर और कम्प्यूटरीकृत यंत्रों द्वारा समान रूप से सुग्राह्य बनाने के उद्देश्य से यूनीकोड का प्रयोग प्रारम्भ हुआ। इसीलिए हिन्दी/देवनागरी की विषय सामग्री के डिजिटल दस्तावेजीकरण के लिए उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय ने यूनिकोड के प्रयोग को अपनाने का निर्णय लिया है।